सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास : पश्चिम विदर्भ मे विशेष संदर्भमे

HISTORY OF CULTURAL, RELIGIOUS AND HISTORICAL TOURIST DESTINATIONS : SPECIAL REFERENCE TO WESTERN VIDARBHA

प्रसन्न प्रकाश बगडे
सहा. प्राध्यापक तथा इतिहास विभाग प्रमुख
श्री गणेश कला महाविदयालय, कुंभारी
जि. अकोला महा.

PRASANNA PRAKASH BAGDE
SHRI GANESH ARTS COLLEGE, KUMBHARI
AKOLA MS

सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास : पश्चिम विदर्भ मे विशेष संदर्भमे

HISTORY OF CULTURAL, RELIGIOUS AND HISTORICAL TOURIST DESTINATIONS : SPECIAL REFERENCE TO WESTERN VIDARBHA

प्रसन्न प्रकाश बगडे

सहा. प्राध्यापक तथा इतिहास विभाग प्रमुख

श्री गणेश कला महाविदयालय, कुंभारी जि. अकोला महा.

सार :

प्रस्तुत शोध मे पश्चिमी विदर्भ के धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के इतिहास का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पश्चिम विदर्भ में अकोला, अमरावती, यवतमाल, वाशिम और बुलढाना जिले सम्मिलीत हैं। इन जिले के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों की विभिन्न प्राचीन परंपराएं आज भी बरकरार हैं। समय के साथ, ये ऐतिहासिक प्राचीन स्थल पर्यटन स्थलों में बदल गए हैं। मानव विकास के साथ इन ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों का संबंध हमारी मान्यताओं, भावनाओं और विचारों से जुड़ा हुआ है।

Key Words : पर्यटन स्थल, इतिहास, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक,

1.1 प्रस्तावना :

पर्यटन इतिहास की एक सुस्थापित शाखा है। प्राकृतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को इतिहास से जोड़ा गया है। पर्यटन का माध्यम पूर्वजों की स्थानीय परंपराओं, संस्कृति, इतिहास और इतिहास के साथ-साथ विभिन्न विचार धाराओं में परिलक्षित होता है। भारतीय पर्यटन का इतिहास हर कोने में समाहित है। पर्यटन को भारतीय संस्कृति का इतिहास विरासत में मिला है। धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में वे सभी स्थान शामिल हैं जहाँ हमारे अतीत की महानता प्रदर्शित होती है। और वहाँ से देश को प्रसिद्धि मिली है। इनमें से कुछ पर्यटन स्थल विश्व धरोहर स्थलों में से हैं। भारत में पर्यटन में स्थल, आश्रम, महल, मंदिर, मस्जिद, चर्च आधार, जनजाति और प्रकृति से भरे स्थान शामिल हैं। अतीत के ये स्मारक इसकी स्थापना, सुंदरता, अनुग्रह, प्रेम, जुनून, कला से भरे हुए हैं। इस शोध में पश्चिमी विदर्भ के पर्यटन स्थलों का अध्ययन किया गया है। पश्चिम विदर्भ में प्रमुख पर्यटन स्थल अमरावती, भक्तिधाम मंदिर, कौडण्यंपूर मंदिर, रिध्दंपुर का महानुभाव मंदिर हैं। अकोला में राज राजेश्वर मंदिर, सालासर हनुमान मंदिर, रुद्रायनी माता मंदिर, पातुर गुफाएं, नारनाला किला और अभयारण्य, बालापुर किला, कालंका देवी मंदिर, वारी

हनुमान यह पर्यटन स्थल शामिल हैं। यवतमाल जिलों में चिंतामणि गणपति मंदिर कलंब, कंबलपोश बाबा दुर्गा, जगदंबा देवी केलापुर, यह ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रकृति पर्यटन स्थल शामिल हैं। प्रमुख पर्यटन स्थल वाशिम में प्राचीन बालाजी मंदिर, वाशिम जिले में बंजारा समुदाय की काशी पोहरादेवी, पार्श्वनाथ मंदिर शिरपुर जैन, गुरुदत्त मंदिर करंजा लाड इसका समावेश है। बुलढाणा जिले में श्री संत गजानन महाराज मंदिर तथा आनंद सागर, वेंकटगिरी, बालाजी मंदिर मेहकर, सैलानी बाबा दुर्गा सैलानी, रेणुका माता मंदिर चिकली, श्री क्षेत्र बुधनेश्वर, हनुमान मूर्ती नांदूरा गिरडा यह प्रमुख धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल है।

इस ऐतिहासिक स्थल की प्राथमिक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक पर्यटन स्थल का एक अनूठा इतिहास है। आज की स्थिति में, यह ऐतिहासिक स्थल एक पर्यटन स्थल के रूप में जाने जाते है, इस स्थान के बारे में लोगों को विश्वास एवं श्रध्दां है। इन धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक पर्यटन स्थल को देखने के लिए लोग यहां आते हैं। लेकिन जैसे-जैसे वर्ष बदलते हैं, विभिन्न प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैंख् और इन पर्यटन स्थलों के ऐतिहासिक महत्व को पर्यटन स्थल के रूप में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, इन पर्यटन स्थलो का ऐतिहासिक दृष्टी से अध्ययन किया गया है।

1.2 शोध के उददेंश :

1. पश्चिम विदर्भ में धार्मिक पर्यटन स्थलों के इतिहास का अध्ययन करना।
2. पश्चिम विदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों के इतिहास का अध्ययन करना।
3. पश्चिम विदर्भ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के इतिहास का अध्ययन करना।

1.3 शोध की व्याप्ती एवं मर्यादा :

इस शोध में, पश्चिमी विदर्भ के पांच जिले अकोला, अमरावती, यवतमाल, वाशिम और यवतमाल में स्थित धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का अध्ययन किया जाता है।

1.4 शोध प्रविधी :

प्रस्तुत शोध में, ऐतिहासिक वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। इन पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन पश्चिम विदर्भ के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों पर जाकर किया गया है। और इस संबंध में उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया है। इस शोध के लिए प्राथमिक और माध्यमिक उपकरणों का उपयोग किया गया है।

1.5 विषय विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध में, पश्चिम विदर्भ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन स्थलों का इतिहास निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है।

1.5.1 अमरावती जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास :

रिध्दपूर :

अमरावती जिले में, रिध्दंपुर को महानुभाव संप्रदाय की काशी के रूप में जाना जाता है, जहां महानुभाव पंथ के उपासक देश-विदेश से आते हैं। यह कारक पर्यटकों के बीच एक प्रमुख माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस भूमि को श्री गोविंदप्रभु, श्री चक्रधर स्वामी और श्री नागदेवचार्य जैसे महापुरुषों ने मुक्त किया गया है।

कौडण्यंपूर मंदिर :

यह वर्धा नदी के तट पर एक ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थल है। बताया गया है कि यहा भीष्म की राजधानी थी। कार्तिकी पोर्णिमा के दिन यहॉ विट्ठल रुक्मिणी यात्रा का आयोजन किया जाता है। इस यात्रा मे तथा यह पर्यटन क्षेत्र को देखने हेतू विभिन्न हिस्सों से पर्यटक आते हैं। यह कौडण्यंपुर मंदिरों और पहाड़ियों पर पाए जाने वाले एक प्राचीन शहर के कारण अधिकांश पर्यटकों यहाँ आकर्षित होते है। हालाँकि इस शहर को कौडण्यंपूर यह नाम कुदीन या कौडिन्य इस ऋषि के नाम से मिला है। इस शहर ने विभिन्नं शासकों को देखा है। तीसरी से सातवीं शताब्दी तक, वाकाटक ने इस भूमि पर शासन किया है।

एकविरा देवी संस्थान :

विदर्भ की बडी बाजारपेठ के नाम से मशहूर अमरावती शहर मे महानयोगी श्री प. पू. जनार्दन स्वामी के व्दारा एकवीरा देवी की स्थापना की है। बताया गया है कि एकादेवी का नाम अंबादेवी के आज्ञा व्दारा प्रचलित हुआ है। एकवीरा देवी शारदीय नवरात्रि को इस संस्थान का एक महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। इस समय, स्थानीय और बाहरी लोग बड़ी संख्या यहाँ दिखाई देते हैं। इसके अलावा, इस स्थान पर बड़ी संख्या में पर्यटको की रेलचेट दिखाई देती हैं।

भक्तीधाम मंदिर :

चांदूर बाजार क्षेत्र मे स्थित भक्तिधाम पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। यह श्री संत गुलाबराव महाराज का कर्मस्थान तथा जन्मस्थान है। उनके कई भक्त नियमित रूप से और बड़ी श्रद्धा के साथ यहां आते हैं। इस स्थान पर, भक्तों को पूर्ण सुख और आत्मनिर्भरता का मार्ग दिखाने का कार्य किया जाता है। इस पर्यटन स्थल के विकास के लिए केंद्र सरकार की तीर्थयात्रा पुनर्वास और आध्यात्मिक प्रोत्साहन कार्यक्रम योजना के व्दारा केंद्र सरकार ने इस तीर्थ यात्रा की विकास योजना को मंजूरी दी है।

बहिरम :

बहिरम एक प्रसिद्ध संस्थान है, यहॉ का मंदिर 125 फीट ऊँचा है। और इस पर चढ़ने के लिए 108 सीढ़ियाँ हैं। यहां की गणपति की प्रतिमा साडेछह फीट ऊंची है और मंदिर के सामने की घंटी का

वजन छह टन है। इस स्थान पर मुख्य रूप से बहिरम भैरव की पूजा की जाती है। हर साल एक महीने भर यहाँ यात्रा चलती है। यहाँ मिट्टी के बरतन में पकाया जाने वाला मटन अपने खास स्वाद के लिए जाना जाता है। इस स्थान पर हजारों पर्यटक भ्रमण के लिए आते हैं।

गुरूकुंज आश्रम :

ग्रामगीता के निर्माता, ग्रामस्वच्छता के पुजारी, अंधश्रध्दा निर्मूलन के क्षेत्र मे अविरत अविश्रांत कार्य जिन्होने किया वे समाजप्रबोधक राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने मोझरी मे गुरूकुंज आश्रम की स्थापना कि है। यह आश्रम पर्यटको का ध्यान आकर्षित करणे वाला है 'सबके लिये खुला है, ये मंदिर हमारा' यह ब्रीद कथन इस आश्रम के प्रवेश व्दार पर दिखाई देता है। इससे भाविकोको इस पर्यटन स्थल के प्रती आत्मियता की अनुभूती आती है। इस मार्ग से जाने वाले बहुतांश भाविक व्दारा इस आश्रम को भेट देते है।

भातकुली जैन धर्मियोका तीर्थस्थल :

भतकुली एक तीर्थक्षेत्र है, जो पर्यटकों को एक शांत, शुद्ध और आराम का अनुभव देता है। इस गाँव की स्थापना रुक्मिणी के भाई राजा रुक्मि ने की थी। यहाँ उन्होंने एक मंदिर बनाया और श्री आदिनाथ की एक काले पत्थर की मूर्ति स्थापित की। बाद में, मुगल काल के दौरान, प्रतिमा के सुरक्षा हेतू उसे एक किले में जमीन के निचे ध्वस्त कर दिया गया था। अठारहवीं शताब्दी में, गांव के मुखिया को एक सपने में इस मूर्ती का प्रकटन हुआ तब इस प्रतिमा के रहस्यों की खोज करने हेतू वहां खुदाई की गई थी वहाँ खुदाई के दरम्यान यह मूर्ती दिखाई दि। जब लंबे समय के बाद नेमसागर महाराज ने यहां का दौरा किया, तो उन्होंने पाया कि यह मूर्ति भगवान आदिनाथ की है, जो जैन धर्म के पहले तीर्थकार थे, और ग्रामीणों व्दारा बड़े विश्वास के साथ यहां एक चैत्यांलय की स्थापना की है।

1.5.2 अकोला जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास :

बालापूर का किल्ला :

बालापूर इस गाँव को प्राचीन इतिहास है। मध्यकाल में, अकबर व्दारा सर्वप्रथम व-हाड प्रांत के बालापूर पर आक्रमण किया गया था। बालापूर का किला मजबूत और चट्टानी है तथा सुरक्षा के लिए उसका आकार त्रि-आयामी निर्माण है। दक्षिण का सुभेदार के रूप मे औरंगज़ेब का पुत्र आदिलशहॉ यहॉ रहता था। और उसने ही इस किले की नींव शुरू की थी। ऐलिचपूर का नवाब इस्माइल खान ने किले के दो परकोट का निर्माण किया उसमे एक परकोट अष्टकोणीय है और दूसरा चौकोर है। बालापुर शहर में, नदी के किनारे पर एक छतरी है जिसे मिर्जा राजे जयसिंग के नाम से जाना जाता है।

नरनाला किल्ला :

अकोट तालुका से 24 किमी उत्तर में दूरी पर, सतपुडा की ऊंची पहाड़ियों पर नरनाला किला फैला हुआ है। यह किला जमीन से 3161 फीट उचाई पर है। किले का विस्तार 382 एकड़ जमीन मे

है। किले के प्रवेशव्दार में 5 द्वार हैं इससे किले की सुरक्षा व्यवस्था को देखा जा सकता है। इस किले पर एक बड़ा जलाशय है, जिसे संकर झील कहा जाता है। जिसमें बारहमासी पानी रहता है। यह झील अपने औषधीय गुणों के लिए भी प्रसिद्ध है। नरनाला अभयारण्य मेलघाट टाइगर प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस किले का प्रथम उल्लेख तारिख-ए-फ़रिश्ता किताब में मिलता है। इस किले की दुरूस्ती बहमनी परिवार के नौवें राजा अहमद शाह वली व्दारा करने का उल्लेख मिलता है। कई पर्यटक इस जगह पर आते हैं।

पातुर की गुफाएँ :

मुगल काल मे नानासाहेब और शहाबाबू यह दो संतो का पातुर नगरी में उदय हुआ। नानासाहब का मंदिर और वाडा तथा हजरत शहाबाबु दर्गा यह प्रमुख स्थान इस नगर के है। सत्तर के दशक में पातुर में बोरडी नदी में सैकड़ों सोने के सिक्कों की खोज की गई थी। इस गाँव के पास वाकाटक कालींन गुफाएँ है यह गुफाएँ अजंता पर्वत के डोगर में बनाई गई हैं। ऐसा कहा जाता है कि तीसरी शताब्दी के वाकाटक वंश के अंतिम राजा, हरिसेन ने उसका प्रधान वराहदेव व्दारा इन गुफाओ का निर्माण किया गया था। यह सभी गुफाओं को बौद्ध गुफाएँ माना जाता है, लेकिन इन गुफाओं में से एक गुफामें महादेव की नक्काशी की गई है। इसके अलावा इस गुफाओ के पिढे धार्मिक मान्यता तथा श्रध्दा भी है।

रेणूकादेवी मंदिर :

पातुर में स्थित रेणुकादेवी मंदिर को विदर्भ में सभी लोगो का श्रध्दांस्थान माना जाता है। रेणुका देवी का मंदिर पातुर शहर के पास बोरडी सुवर्णा नदी के तट पर एक पहाड़ी पर स्थित है। यहां की मूर्ति पहले से ही एक पेड़ के नीचे थी। बाद में मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया। भक्तों का मानना है कि यह देवी मनोरथ पूरा करने वाली है और भक्तों की इच्छाओं को पूरा करती है। यह भाविको की श्रध्दां है।

राज-राजेश्वंर मंदिर :

अकोला शहर के जुने शहर क्षेत्र में राज-राजेश्वर का मंदिर स्थित है तथा यह अकोला शहर का ग्रामदैवत भी माना जाता है। इस मंदिर को बहुत पुराना इतिहास है तथा भगवान महादेव का भव्यं शिवलिंग यहॉ है। अकोलासिंह की पत्नी, जो महादेव की एक निस्सीम भक्त थी, वह नियमित रूप से इस मंदिर में आती थी। राजा को रानी पर शंका आई और उसने उसका पिच्छा कीया जब रानी शिवलिंग की पुजा कर रही थी तब राजा मनोमन शर्मिंदा हो गया, लेकिन रानी को इसका बहुत दु:ख हुआ और उसके मन को भारी चोट पहुचीं। उसने राज-राजेश्वर को आराधना की, की वह उसे अपने आप के सम्मिलीत कर ले उसी वक्तं शिवलिंग के मध्यं राणी गुप्तं हो गई। हर साल श्रावण मास में एक बड़ा त्योहार होता है।

कालंका माता मंदिर बार्शिटाकळी :

बार्शीटाकली में काले पत्थर से निर्मित कालंका देवी का मंदिर और मूर्ति है। यह मंदिर ग्यारहवीं शताब्दी में काले पत्थर से निर्मित है। इस बात के प्रमाण हैं कि मंदिर का निर्माण 1177 में हुआ था। यह देवी स्थानीय लोगों की ग्रामदेवाता हैं। यह देखा जाता है कि, मंदिर वास्तुकला के आधार पर बनाया गया है। इस मंदिर में एक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर है।

रूद्रायणी देवी मंदिर :

पातुर तालुका में चिंचोली गाँव के पास रूद्रायनी देवी का एक प्राचीन मंदिर है। इस देवी का नाम से ही इस गाव को चिंचोली रुद्रयानी यह नाम प्राप्तं हुआ है। यह 14 वीं शक्ति पीठ, देवी दुर्गा का तीर्थ माना जाता है। यह मंदिर एक पहाड़ी पर स्थित है, और हर साल नवरात्रि में बड़ी संख्या में भक्तों को यहाॅ देखा जाता है। भगवान रामचंद्र का इस स्थान से संबंध पुराणों में बताया गया है। इसके अलावा, पोला त्योहार को बैलों को यहाॅ दर्शन हेतू लाने की प्रथा है।

सालासर बालाजी मंदीर :

यह मंदिर अकोला शहर में गंगा नगर क्षेत्र में स्थित है। इनमें हनुमानजी, श्रीराम दरबार श्री राधाकृष्णन और श्री शिव परिवार की मूर्तियाँ शामिल हैं। हर साल यहां सालासर मंदिर उत्सव मनाया जाता है। इस जगह को सुंदर और अच्छी तरह से सजाया गया है, यह परिवेश मन को खुशी और शांति प्रदान करता है। विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के कारण भक्तों की भीड़ दिन-प्रतिदिन यहाॅ बढ़ती जा रही है।

वारी भैरवगड :

सातपुड़िया पर स्थित वारी एक बहुत प्राचीन स्थान है। ऐसा कहा जाता है यहाॅ के हनुमान मंदिर की स्थापना रामदास स्वामी व्दारा की गयी थी। यहाॅ हनुमानजी की 15 फुट की ऊंची प्रतिमा है, तथा मूर्ती के पैरो के पास एक राक्षस और उसके हाथों पर द्रोणागिरी पर्वत है। यहापर हनुमान जयंती को एक विशेष यात्रा का आयोजन किया जाता है। तथा यहाॅ पर भैरवगड नाम की अत्यंत जिर्ण अवस्था मे एक गढी है यह प्राचीन काल मे गोंड राजा का किला था ऐसा भी माना जाता है।

अकोली जहागिर :

अकोट तालुका में, अकोली जहाँगीर में गजानन महाराज की विरासत है। इस जगह पर श्री संत गजानन महाराज व्दारा जलमय किया गया कुआ है उसे देखने हेतू धार्मिक उद्देश्यों से कई पर्यटक यहाॅ आते हैं।

1.5.3 वाशिम जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास :

बालाजी देवस्थान :

वाशिम शहर में बालाजी मंदिर एक पुराना मंदिर है यह मंदिर प्राचीन और पवित्र माना जाता है। कहा जाता है की वेंकटेश्वर बालाजी मंदिर की मूर्ति को औरंगजेब के शासनकाल में नष्ट होने से बचाने के लिए दफनाया गया था। शिलालेख से पता चलता है कि इस मंदिर का काम 1700 और 1776 के बीच पूरा हुआ था। मंदिर की छवि काले पत्थर की है। सैकड़ों भक्त यहाँ बालाजी के दर्शन करने आते हैं।

पोहरादेवी :

पोहरादेवी और बंजारा समुदाय का अतुट संबंध है। पोहरादेवी गाँव का बंजारा लोगों के जीवन में एक अनूठा महत्व है। लगभग 276 साल पहले, संतमूर्ति सेवादास महाराज बंजारा जनजाति के अवतार बन गए थे। सेवादास महाराज को बंजारा समाज के लोग अधिनायकवादी मानते हैं। यह बताया जाता है कि सेवादास महाराज ने अपनी मृत्यु से पहले पोहरादेवी में बड़े पेड़ के नीचे अपने मकबरे का स्थान दिखाया था और वहां पर ही समाधि ली थी। इस कारण, इस स्थान ने बंजारा समुदाय में अद्‌वितीय महत्व प्राप्त किया है।

पार्श्वनाथ मंदिर :

शिरपुर को जैन धर्मों की काशी के रूप में जाना जाता है। यह एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है और पारसनाथ स्वामी की प्राचीन प्रतिमा अधर स्थिती मे यहाँ है। संपूर्ण भारत से जैन धर्म के श्रावक यह मूर्ती देखने हेतू यहॉ आते है। चूंकि यह तीर्थयात्रा दुनिया में प्रसिद्ध है, इसी कारण शिरपूर गांव को प्रसिद्धि प्राप्तं हुई है। मंदिर में 16 तीर्थकरो की मूर्तियों तथा प्रतिमाएं विदयमान हैं। 23 वें तीर्थकार पार्श्वनाथ भगवान व पदयावती देवी इनकी प्रतिमा मूर्ती दिंगबर अवस्थामे यहाँ स्थापित है।

गुरूदत्तं मंदिर :

कारंजा नगर, महान दत्तावतारी श्री नरसिंह सरस्वती की जन्मभूमि होने के कारण प्रसिद्ध है। श्री वासुदेवानंद सरस्वती और श्री ब्रहमानंद सरस्वती स्वामी के प्रयासों के कारण, श्रीगुरु के इस जन्म स्थान का महत्व सभी दत्तभक्तों में है। यहॉ के गुरूमंदिर के कारन यह जगह दत्तंभक्तो के लिये प्रिय है।

1.5.4 बुलढाणा जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास :

सिंदखेड राजा :

विदर्भ के बुलढाणा जिले के सिंदखेड़ गांव को जाधव राव राजा की उपाधि के बाद सिंदखेड़ राजा के रूप में जाना जाता था। छत्रपति शिवाजी महाराज के आजोड के रूप मे भी सिंदखेड को

ऐतिहासिकदृष्टी से महत्वपूर्ण स्थान है। सिंदखेड गाव का मूल नाम अलापुर, सिंधु राजा के नाम से सिंदखेड और राजे लखुजी जाधवराव के नामपर से सिंदखेडराजा तथा राजमाता राष्ट्रंमाता जिजाऊ का जन्मंस्थल के रूप मे आज मातृतीर्थ सिंदखेड राजा के नाम से सिंदखेड भारत के इतिहास मे अजरामर है। यहॉ के अवशेषोसे स्पष्टं होते की, 12 वीं शताब्दी से सिंदखेड़ एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल हैं। महाराष्ट्र में कई राजवंशों ने इतिहास रचा है, जिसमें सिंदखेडकर लखोजी जाधवराव के परिवार से हैं। इस परिवार में कई वीर पैदा हुए थे। जीजाऊ जैसी वीर बेटी, वीर पत्नी और वीर माता इस घर में प्रकट हुई थी। यहॉ के मंदिरों के कई स्मारक, प्रसाद, महल, किले, मंदिर और मंदिर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

श्री संत गजानन महाराज मंदीर :

शेगाँव में श्री संत गजानन महाराज का एक भव्य मंदिर है। महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि पूरे भारत से पर्यटक बड़ी श्रद्धा के साथ यहाँ आते हैं। संत गजानन महाराज का प्रथम दर्शन दिंगंबर बाल रूप मे हुये और अपने 32 वर्षीय अवतार कार्यव्दारा उन्होने आध्यात्मिक दुनिया में एक अढळ स्थान निर्माण किया है। शेगाव मे उनका भव्यं समाधी मंदरी का निर्माण किया गया है। मंदिर प्रशासन द्वारा विविध सुविधाओं की उपलब्धता प्रदान की जाती है, इसलिए हमेशा भक्तों की भीड़ लगी रहती है। इसके अलावा, आनंद सागर को स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था, जिसके माध्यम से पर्यटकों को बड़ी संख्या को आकर्षित किया जाता है।

बालाजी मंदिर व्यंकटगिरी :

व्यंकटगिरी बालाजी का शानदार मंदिर बुलढाणा जिले के राजुर घाट के दर्शनीय क्षेत्र में स्थित है। इस जगह पर तिरुपति बालाजी का भव्यं मंदिर है।

बालाजी मंदिर मेहकर :

यहाँ पर भगवान शारंगधर बालाजी का मंदिर 120 वर्ष से अधिक प्राचीन है। इस जगह पर मिले तांबे, कांस्य, सोना आदी धातु में पाए गए शिलालेख इंग्लैंड के ब्रिटिश संग्रहालय में स्थित हैं। हर साल, बालाजी उत्सव यहाँ मनाया जाता है।

बालाजी मंदिर देऊळगाव राजा :

यहां पर स्थित प्राचीन बालाजी मंदिर महाराष्ट्र के तिरुपति मंदिर के रूप में जाना जाता है। मंदिर का निर्माण राजा जगदेव जाधव ने 1665 में करवाया था। हर साल, अक्टूबर के महीने में, बालाजी महाराज की तीर्थयात्रा मनायी जाती है।

सैलानी बाबा दर्गा :

बुलढाणा के पास यह एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। देश भर से कई श्रद्धालु पर्यटक यहॉ आते हैं। यह तीर्थ क्षेत्र सर्वधार्मिय है और हर साल एक विशाल तीर्थयात्रा का आयोजन यहॉ किया जाता है।

यह स्थान सभी धर्मों की पंढरी माना जाता है, यह एक पवित्र जगह है, जहाँ जाति, पंथ, धर्म के अलावा श्रध्दां के आधार पर माथे को झुकाया जाता है।

श्री क्षेत्र बुधनेश्वरं मढ :

पैनगंगा नदी का स्रोत पर बुधनेश्वर स्थित है। प्राचीन काल मे सहयांद्री पर्वतपर गंगाजल से भरा ब्रम्हंदेव का कमंडलू गिर गया तबसे यह स्थान कुंडीका तीर्थ के नाम से प्रसिध्दं है।

हनुमान मूर्ती :

नांदुरा शहर में भगवान हनुमान की एक मूर्ति है, जो कि सर्वोच्च 105 फीट ऊँची है। यह शहर के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक है।

गिरडा :

अजंता पर्वत श्रृंखला एक आध्यात्मिक रूप से प्रसिद्ध क्षेत्र है। जो हर समय पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस स्थान पर स्थित प्राचीन महादेव मंदिर के कारण, गाँव की पुरानी पहचान है। जब पांडव वनवास मे थे, तब अर्जुन ने तीर चलाया और पीने के पानी का स्रोत बनाया यहॉ बनाया था यह आख्यायिका इस संदर्भ मे प्रंचलित है।

1.5.5 यवतमाळ जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का इतिहास :

चिंतामणी गणपती मंदिर :

पूरे भारत में 21 गणेशस्थानों में से एक जो की, श्री गणेशपुराण में वर्णित है। विदर्भ के यवतमाल जिले में स्थित श्री चिंतामणी गणपती मंदिर कलंब है। यह एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल है। बहुतांश भक्तों का मानना है कि, श्री चिंतामणी स्वयंभू हैं। इस मंदिर में मूर्ति की स्थापना कदंब ऋषियों द्वारा की गई है। यह मंदिर हेमांडपंथी है और 7 वीं 8 वीं शताब्दी में चालुक्य या द्रविड़ शैली के प्रभाव में बनाया गया था। इसलिए ऐसा लगता है कि इस मंदिर का जीर्णोद्धार संभवत: 12 वीं 13 वीं शताब्दी में हुआ था। पर्यटक यहां बड़ी भक्ति के साथ देखे जाते हैं।

कंबलपोष बाबा दर्गाह :

आर्णी गाँव अरुणावती नदी के तट पर स्थित है। यहीं पर कंबलपोष बाबा की महान यात्रा का आयोजन किया जाता है। हिंदू, मुस्लिम और अन्य धार्मिय लोग भी इस स्थान पर आते हैं और श्रध्दां रखते हैं।

जगदंबा संस्थान केळापूर :

यहापर जगदंबा माता का अतिप्राचीन हेमांडपंथी मंदिर स्थित है। आंध्र प्रदेश और विदर्भ से बड़ी संख्या में भक्त यहाँ आते हैं। 1982 से 1987 इस काल मे मंदिर का जिर्णोध्दांर किया गया है।

1.6 निष्कंर्ष :

पश्चिम विदर्भ में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की शानदार विरासत है। इन पर्यटन केंद्रों में से अधिकांश सर्व धर्म सहिष्णुता और विश्वबंधूत्वं के आधार पर स्थापित हैं, कई पर्यटक यहाँ आते है। पश्चिम विदर्भ के पर्यटन स्थल आज भी अपने पुरातन इतिहास की साक्ष्यं देते है। इस धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक एंव ऐतिहासिक अनमोल विरासत को आधुनिक पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा रहाँ है। तत्कांलीन परंपराएं, प्रथा, मंदिर, कला नक्षीकाम, साहस के प्रतीक आज भी प्रेरणादायक हैं। ऐसे ऐतिहासिक स्थलों पर विभिन्न प्रयोजनों के लिए पर्यटकों की एक बड़ी विविधता दिखाई देती है। पश्चिमी विदर्भ के इन सभी पर्यटन स्थलों का एक प्राचीन इतिहास रहाँ है और इस इतिहास को पर्यटन के माध्यम से संरक्षित करने का कार्य निरंतर शुरू है। इन पर्यटन स्थलों के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन विकास निगम, तीर्थक्षेत्र विकास प्राधिकरण के माध्यम से इन धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के विकास और प्राचीन धरोहरों के संरक्षण की आवश्यकता है। इस ऐतिहासिक धरोहर की मूर्ति समय के साथ विलुप्त होने के कगार पर है।

संदर्भ ग्रंथ :

- कारंजकर, भि. दे. अमरावती शहराचा इतिहास. अमरावती : महानगर पालिका शताब्दी ग्रंथ.
- माने, ग. का. (1998). अमरावती एक ऐतिहासिक शहर. नागपूर-अमरावती विदयापीठ इतिहास परिषद स्मंरणिका.
- Maharashtra state Gazzetter Amravati District.
- गोडबोल आशुतोष. (2015). गाविलगड वैभवशाली बांधकामाचा बलदंड किल्ला www.thinkmaharashtra.com/node/2217
- कोलते, वि.भी. श्री गोंविद प्रभू यांचे चरित्र. मलकापूर : कोलते प्रकाशन.
- दीक्षित मोरेश्वरं (1968). एक्स्क्व्हेशन ॲक्टं कौंडण्यंपूर. मुंबई.
- विदर्भिय कुलस्वामीनी श्री एकविरा देवी अमरावती पुस्तीका.
- Maharashtra State Gazerreers Department. Amravati District Gazetteers https://gazetteers.maharashtra.gov.in/cultural.maharashtra.gov.in/english/gazetteer/AMRAVATI/places_Chandur%20Bazar.html
- खोरगडे कुमुदिनी. राष्ट्रसंत तुकडोजी : चिकित्संक अध्ययंन. पुणे : महाराष्ट्रं राज्यं साहित्यं संस्कृती मंडळ.
- Maharashtra State Gazerreers Department. Amravati District Gazetteers https://gazetteers.maharashtra.gov.in/cultural.maharashtra.gov.in/english/gazetteer/AKOLA/places_Balapur.html
- चितळे श्रीपाद (2005). विदर्भातील किल्ले. नागपूर : मंगेश प्रकाशन.

- वडतकार जयंत पातुरच्या लेण्यांची माहिती.
- जाधव राजू नामदेव (2009). आदिशक्ती रेणूका. माहुरगड : श्री रेणूकादेवी संस्थान सातवी आवृत्ती.
- देशपांडे कृष्णंराव वत्संगुल्मं प्राचीन वाशीम. परभणी : विश्वनाथ प्रिटींग प्रेस.
- काळू ज्ञा. ग. आणि काळू भवनीपंत (1994). वाशिमच्या श्री बालाजी देवस्थानचा इतिहास. औरंगाबाद : मंगेश प्रकाशन.
- श्री. नृसिंह सरस्वती स्वामी महाराज संस्थान. श्री क्षेत्र कारंजा जिल्हा वाशीम माहिती पुस्तीका.
- केतकर श्रीधर व्यंकटेश. महाराष्ट्रीय ज्ञानकोष. मुंबई : यशवंतराव चव्हांण प्रतिष्ठान.
- बाहेकर एस. ए. (2009). राजे लखुजी जाधवराव. जळगाव : कसब प्रकाशन.
- देशमुख विजय (1962). सिंदखेड राजा पुरातत्वं व वस्तुसंग्रहालयाचे विभाग महाराष्ट्रं शासन मुंबई
- संत गजानन महाराज मंदिर व आंनद सागर माहिती पुस्तीका 2017
- Maharashtra State Gazerreers Department. Amravati District Gazetteers https://gazetteers.maharashtra.gov.in/cultural.maharashtra.gov.in/english/gazetteer/YAVATMAL/his modern%20period.html
- मांडवकर पवन. (2015). वैदर्भीय अष्टंविनायक. कळंब : डॉ. भाऊ मांडवकर संशोधन केंद्र इंदिरा महाविदयालय.